Today's Poem – 01.07.2014

देही-अभिमानी बनो तो हो जाएँगे शीतल

विकारों की बांस जाएगी निकल

अन्तर्मुखी हो जाएँगे

फूल बन जाएँगे

बाप देते हमें दो वरदान

शांति और सुख से करो जग का कल्याण

बाप से आशीर्वाद वा कृपा नहीं मांगनी

अपने ऊपर आपेही कृपा करनी

माया से रहना खबरदार

है वो बड़ी ज़ोरदार

कभी भी उल्टा-सुल्टा नहीं बोलना

ना खुद अशांत होना ना किसी को अशांत करना

बाप के साथ कंबाइंड हो हर कर्म करना

पुरानी दुनिया में अपने को गेस्ट समझना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!